नव संवत्सर गुड़ीपड़वा पर 6 लोगों का देहदान संकल्प पत्र

जवाहर डोसी पीयूष। ईश्वर द्वारा रचित अदभुत सृष्टि की सबसे श्रेष्ठतम कलाकृति है मानव और ईश्वर ने 84 लाख योनियों में केवल मानव को ही बुद्धि प्रदान की है जिसका वह सदुपयोग कर मानव कल्याण को समर्पित कार्य समय-समय पर करता रहता है।ऐसा ही कार्य नववर्ष वर्षप्रतिपदा एवं चेटीचांद पर देहदान संकल्प पत्र भरकर 6 लोगों ने उत्सव को आनंदित और परिमार्जित कर आनंदोत्सव के रूप में मनाया। 1 डॉ.गिरधारीलाल जेठवानी, 2 दुर्गा जेठवानी, 3 रानी वाधवानी, 4 आशादेवी गोयनका, 5 राजेन्द्रसिंह ठाकुर, 6 हर्षा चेतवानी, गिरधारीलाल जेठवानी एवं दुर्गा जेठवानी 101,102 श्वङ्खस्र इन्दिरा नगर कॉलोनी निवासी, रानी वाधवानी 14/2 सुभाष नगर निवासी, श्रीमती आशादेवी गोयनका 50 महेश नगर निवासी , राजेन्द्रसिंह ठाकुर 60 कीर्ति नगर निवासी, हर्षा चेतवानी 81 अल्लखधाम नगर कॉलोनी उज्जैन निवासी होकर परोपकार के विचारों में अग्रगण्य हैं।

जीते जी रक्तदान, मृत्युपरांत देहदान- जहां रक्तदान से किसी जरूरतमंद को जीवन मिल सकता है वहीं नेत्रदान से दो लोगों को नेत्रज्योति,उससे बढ़कर अंगदान जिससे 7 लोगों तक को जीवनदान लेकिन देहदान के माध्यम से मेडिकल कालेज में छात्रों को मिले ज्ञान से हजारों ही नहीं बल्कि लाखों लोगों को जीवनदान मिलता है। मुस्कान ग्रुप सेवादारों ने अन्य संस्थाओं-लॉयंस क्लब उज्जैन, सक्षम संस्था उज्जैन जिला इकाई, भारत विकास परिषद के सहयोग से विगत तीन वर्षों में ही 84 देहदान संकल्प पत्रों के साथ- साथ 21 देहदान, 242 नेत्रदान, 3 त्वचादान, 1 अंगदान में सहयोगी रहा है जो निःशुल्क 24M7 आपके सहयोग और सेवा में उपलब्ध है। 9893174748, 7000122811, 7000877505, 9827049704

परहित में है क्षणभंगुर जीवन की सार्थकता - बोहरा

बाड़मेर । नूतन वर्ष के स्वागत व राजस्थान दिवस के उपलक्ष में रविवार को जन कल्याण संस्थान, बाड़मेर की ओर से सार्वजनिक श्मशान घाट में सेवानिवृत बैंक मैनेजर गिरधारीलाल सिंघवीं व अध्यक्ष मुकेश बोहरा अमन आदि की उपस्थिति में पक्षियों की सेवा में मिट्टी के परिण्डे लगाऐ गए। तथा उन परिण्डे में श्मशान मोर्निंग ग्रुप के सदस्यों ने नियमित जल भरने व रखरखाव का संकल्प लिया। संस्थान अध्यक्ष मुकेश बोहरा अमन ने कहा कि जन कल्याण संस्थान, बाड़मेर की ओर से पक्षियों के संरक्षण को लेकर वृहद स्तर पर परिण्डा अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत् भगवान महावीर स्वामी के 2624वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष में 2624 परिण्डे लाये जा रहे है। जिसमें प्रतिदिन नियमित रूप से अलग-अलग स्थानों पर मिट्टी के परिण्डे लगाने का कार्य किया जा रहा है। जहां रविवार को नूतन वर्ष के स्वागत व राजस्थान दिवस के उपलक्ष में श्मशान घाट में मिट्टी के परिण्डे लगाये गये। अमन ने कहा कि क्षणभंगुर मानव जीवन की सार्थकता सिर्फ और सिर्फ परहित के कार्यो में है। हमें जीवन की नश्वरता को समझते हुए जीवन को परोपकार के कार्यो से जोड़ना चाहिये। संस्थान के हरीश बोथरा ने बताया कि परिण्डा अभियान के दौरान गिरधारीलाल सिंघवीं, मुकेश बोहरा अमन, गौतमचन्द संखलेचा, पारसमल नाहटा, पुखराज सिंघवीं, श्रवण मालू, मदन सिंघवीं, सुनील बोहरा, रमेश बोहरा, किशनलाल संखलेचा, गौतम मालू, हरीश बोथरा सहित मोर्निंग ग्रुप के सदस्य उपस्थित रहे।

संवत्सर 2082-भारतीय कृषि परंपरा की पुर्नस्थापना का समय

30 मार्च 2025 से विक्रम संवत 2082 की शुरुआत होगी। परंतु अंग्रेजीपरस्त तथा अंग्रेजी कैलेंडर के आदी हो चुके भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से को नववर्ष के इस महापर्व की खबर तक नहीं होगी। आधुनिकता के नाम पर हमने पश्चिमी कालगणना को अपनाकर अपने संवत्सर को भुला दिया। यही कारण है कि हमारी कृषि, जो कभी प्राकृतिक चक्रों और मौसम की सटीक समझ पर आधारित थी, अब बाजार केंद्रित तकनीकों की प्रयोगशाला बनकर जलवायु संकट, घटती उर्वरता और किसान आत्महत्याओं की त्रासदी झेल रही है। संवत्सर मात्र तिथियों का क्रम नहीं, बल्कि भारतीय कृषि प्रणाली का वैज्ञानिक दिशासूचक था। यह प्रकृति, ऋतु परिवर्तन और कृषि कार्यों के बीच के संतुलन का अद्भुत उदाहरण था।

संवत्सर और भारतीय कृषि का गहरा संबंध ¬ विक्रम संवत का हर वर्ष खगोलीय गणनाओं और कृषि चक्रों पर आधारित था। नवसंवत्सर का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है, जब वसंत ऋतु अपने चरम पर होती है और खेतों में गेहूं, चना, सरसों, मसूर जैसी रबी फसलें पककर तैयार होती हैं। इसी समय खरीफ फसलों की बुवाई की तैयारी शुरू होती है। गुड़ी पड़वा, युगादि, चैत्र नवरात्रि, बैसाखी, पुथंडु आदि सभी पर्व वस्तुतः कृषि-पर्व हैं तथा संवत्सर प्रणाली के अनुसार ही तय होते हैं

प्राचीन कृषि ज्ञान- आधुनिक विज्ञान के लिए चुनौती ¬ आज विज्ञान जिन तकनीकों को नई खोज बता रहा है, वे हजारों वर्ष पहले भारतीय कृषि ग्रंथों में दर्ज थीं। विशेष रूप से नैसर्गिक कृषि पद्धति के मामले में भारत को संदेश विश्व का अगुवा कहा जा सकता है।

1. फसल चक्र और मिट्टी की उर्वरता ¬ महर्षि पाराशर द्वारा रचित %कृषि पाराशर % में स्पष्ट निर्देश था कि हर चार वर्षों में खेत को एक वर्ष विश्राम देना चाहिए, ताकि उसकी उर्वरता बनी रहे। आधुनिक कृषि विज्ञान इसे फसल चक्र (छ्रह्लश्च ऋह्लह्वह्लद्बह्मठ्ठ) कहता है, लेकिन भारतीय किसान इसे सदियों से जानते थे। 2. मिश्रित खेती और पारिस्थितिक संतुलन ¬ सुरपाल% लिखित दुर्लभ ग्रंथ %वृक्षायुर्वेद% के अनुसार, कुछ फसलें परस्पर पूरक होती हैं। जैसे- वर्तमान में इन्हीं सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए कोंडागांव बस्तर में काली मिर्च को ऑस्ट्रेलियाई टीक अन्य ऊँचे वृक्षों के साथ उगाकर बेहतर गुणवत्ता की दुगनी, चौगुनी पैदावार ली जा रही है। धान और दलहन (अरहर, मूँग, उड़द) को साथ उगाने से मिट्टी में नाइट्रोजन संतुलन बना रहता है। 3. प्राकृतिक ग्रीनहाउस और जल संरक्षण ¬ आज नेचुरल ग्रीनहाउस को क्रांतिकारी खोज माना जा रहा है, लेकिन इसकी प्रेरणा भी मूलतः प्राचीन भारतीय कृषि ज्ञान कोष से ही ली गई है। इसमें पेड़ों की छाया में नमी संरक्षण, जल स्रोतों के समुचित टिकाऊ दोहन,जल स्रोत के पास खेती, और जैविक मल्चिंग तकनीकों का उपयोग कर तापमान और नमी संतुलन बनाए रखा जाता था। 4. संवत्सर आधारित मौसम भविष्यवाणी और कृषि योजना ¬ ? प्राचीन वैज्ञानिक वराहमिहर द्वारा रचित %बृहत्संहिता% में %वृक्षायुर्वेद% पर भी एक अध्याय है। बृहत्संहिता और घाघ-भड्डरी की कहावतें किसानों में,नआज भी मौसम पूर्वानुमान के लिए प्रासंगिक हैं। नक्षत्रों और चंद्रमा की चाल के आधार पर बुवाई और कटाई का समय निर्धारित किया जाता था। हाल ही में ह्रद्र ने भी यह सिद्ध किया है कि चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण पौधों के जल अवशोषण और वृद्धि को प्रभावित करता है। तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक ¬ नई वैज्ञानिक तकनीकों का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। परंतु अंधानुकरण घातक हो सकता है। उदाहरण के लिएः

जीएम (Genetically Modified) फसलें- मानव जाति के लिए क्रांतिकारी खोज बताई जा रही हैं, लेकिन इनके मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर दूरगामी प्रभावों का पर्याप्त अध्ययन नहीं हुआ है। क्या मानव डीएनए पर इनके दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण हुआ है? नहीं! रासायनिक खेती ङ्क अल्पकालिक उत्पादन बढ़ाती है, लेकिन दीर्घकाल में मिट्टी, जल और जैव विविधता को नष्ट कर देती है। संतुलित कृषि पद्धति की आवश्यकता ङ्क आधुनिक विज्ञान को पारंपरिक ज्ञान के साथ मिलाकर ऐसी कृषि पद्धति विकसित करनी होगी जो जलवायु संकट और पर्यावरणीय क्षति से बचाव कर सके।

संवत्सर 2082 का संकल्प ¬ कृषि पुनर्जागरण - विक्रम संवत 2082 केवल एक नया साल नहीं, बल्कि भारतीय कृषि परंपरा के पुनर्जागरण का अवसर है। हमें अपनी संवत्सर आधारित कृषि प्रणाली को पुनर्जीवित करना होगा, ताकि हमारी खेती फिर से जलवायु अनुकूल, लाभदायक और सतत टिकाऊ बन सके। हमारे पुरखों ने ही कहा है ÷कृषिर्नं जीवनस्य मूलं, धार्त्याः सौंदर्यमेव च।÷ (अर्थात÷ कृषि ही जीवन का मूल है और धरती माता का सौंदर्य है।) अब समय आ गया है कि हम परंपरागत कृषि ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को मिलाकर भविष्य के लिए संतुलित कृषि मॉडल तैयार करें। यही सच्चे अर्थों में नवसंवत्सर का संदेश है!

(लेखक÷ डॉ. राजाराम त्रिपाठी, पर्यावरण, कृषि एवं ग्रामीण अर्थशास्त्र विशेषज्ञ)

राजस्थान की संस्कृति की पुर्नव्याख्या समय की जरूरत - डॉ. सुरेन्द्र सोनी

राजस्थान अपनी समृद्ध संस्कृति के कारण ही अग्रणी और पूज्य - उमा मित्तल

राजस्थान स्थापना दिवस समारोह

श्रीडूंगरगढ़। राजस्थान स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार समिति की ओर से आयोजित समारोह में ÷विरासत और संस्कृति का पर्व ¬ राजस्थान दिवस÷ विषय पर बोलते हुए राजस्थानी भाषा के साहित्यकार डॉ चेतन स्वामी ने कहा कि राजस्थानी संस्कृति समूचे विश्व को अपने विशिष्ट गुणों के कारण आकर्षित करती है। इस संस्कृति ने हमें, साहित्य, संगीत, मान्यताओं, मर्यादाओं, शिल्प, कला, रीति रिवाज, लोक वैविध्य और भाषा के रूप में अनोमल धरोहर सौंपी है। हमें सारी चेष्टा लगाकर अपनी विरासत के क्षय को रोकना चाहिए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ0 स्वामी ने कहा कि हमने अब तक जो मूल्य, संस्कार आदि संजोए है, वे हमारी संस्कृति के भौतिक और अभौतिक दोनों स्वरूपों को अभिव्यक्त करते हैं। उन्होंने इस बात पर अधिक जोर दिया कि संस्कृति की रक्षा के लिए राजस्थानी भाषा की संरक्षा जरूरी है, अन्यथा राजस्थानी संस्कृति अपना मूल स्वरूप खो देगी। उन्होंने प्रकृति, विकृति और संस्कृति के रूपों को समझाया। मुख्य वक्ता इतिहास के प्रोफेसर डॉ सुरेन्द्र डी सोनी ने कहा कि राजस्थान की संस्कृति को इसके इतिहास के पृष्ठों पर खोजना होगा। आज वक्त आ गया है इतिहास की पुनर्व्याख्या करने का। हमारे सांस्कृतिक इतिहास के बहुत सारे पक्ष अविवेचित पड़े हैं। हमारी विरासत के वे नायक जो विस्मृत है, अब उनकी चितार जरूरी है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विषय प्रवर्तन करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता सत्यनारायण योगी ने कहा कि राजस्थानी संस्कृति देश-विदेश में विख्यात है, इसके सभी समृद्ध विषयों से पूरे विश्व को अवगत कराने की आवश्यकता है। डिंगल प्रख्यात साहित्यकार विशिष्ट वक्ता गिरधरदान रतनूं ने कहा कि राजस्थानी संस्कृति के सात मूलाधार हैं। डिंगळ के कवियों ने जो कुछ लिखा है, वह इस धरति के सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों को विवेचित करने वाला है। उन्होंने कई मार्मिक उदाहरणों से अपने कथन को समझाया। विशिष्ट अतिथि उपखंडाधिकारी उमा मित्तल ने कहा कि राजस्थान अपनी संस्कृति के कारण ही सर्वत्र शोभायमान है। राजस्थान सरकार ने आदेशित किया है कि अब से राजस्थान दिवस को चेत्र प्रतिपदा के दिन मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान की संस्कृति समष्टि के तत्त्वों पर आधारित है। विषय का समाहार करते हुए संस्थाध्यक्ष श्याम महर्षि ने कहा कि राजस्थान की धरती अनूठी है। इसी धरती पर प्रथम वेद के रूप में ऋग्वेद की रचना हुई। हमारे घरों में यज्ञ के संक्षिप्त रूप को स्त्रियां आज भी बचाए हुए है। संस्कृति दुश्मन विकृति होती है, उससे बचना चाहिए। प्रारम्भ में संस्था मंत्री रवि पुरोहित ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। सुश्री मनसा सोनी ने काव्यपाठ किया तथा सरोज शर्मा ने विचार व्यक्त किए। समारोह का सुंदर संयोजन कवयित्री भगवती पारीक मनु ने किया। समारोह में रामचन्द्र राठी, महावीर सारस्वत, विजय महर्षि, सोहनलाल ओझा, नारायण सारस्वत, महेश जोशी, गोपीराम फूलभाटी, श्याम सुंदर आर्य, सुरेन्द्र राजपुरोहित, सत्यदीप, भंवर भोजक, शकूर बीकाणवी आदि अनेक विद्वानों ने सहभागिता निभाई

गर्मी के दिनों में पानी पीने के सही तरीके

जल है तो जीवन है। दूसरे शब्दों में जल ही जीवन है। जल या पानी के बिना जीवन संभव नहीं है। गर्मी के दिनों में तो सभी प्राणियों के लिए पानी का महत्व अमृत समान हो जाता है। लेकिन भीषण गर्मी में उचित समय पर, सही तरीके से और सही मात्रा में यदि आप पानी नहीं पीते हैं तो ये आपके लिए प्राणघातक या जानलेवा भी हो सकता है। सबसे पहले तो हमें बांग्ला भाषा के इस सत्य कथन पर अमल करना चाहिए जिसमे कहा गया है, % खाली पेटे जल, भोरा पेटे फल %। अर्थात सुबह उठकर खाली पेट जल पीना चाहिए और खाना खाने के बाद भरे पेट में फ़ल खाना चाहिए। सबेरे नींद से उठते ही हमे एक गिलास सादा पानी पीना चाहिए। फिर मुंह धोने के बाद चाय नाश्ता से ठीक पहले फिर एक गिलास पानी पीने की आदत डालनी चाहिए। कुछ लोग सुबह नींद से उठते ही बिस्तर पर ही %बेड टी% ले लेते हैं। आयुर्वेद के अनुसार ऐसा करना सर्वथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। सुबह खाली पेट जल की जगह चाय पीने से पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है और मधुमेह(डायबिटीज) से ग्रसित होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। स्वास्थ विज्ञान के अनुसार प्रतिदिन सुबह से रात तक हमें कम से कम 2 से 3 लीटर पानी पीना चाहिए। गर्मी के दिनों में पानी का मात्रा बढ़ाकर 3 से 5 लीटर कर देना चाहिए। एक बार में ज्यादा पानी न पीकर रह रह कर थोड़ा थोड़ा पानी पीना चाहिए। याद रहे, नाश्ता या भोजन करने के तुरंत बाद जल ग्रहण नहीं करना चाहिए। कम से कम पंद्रह मिनट बाद पानी पिएं। लेट कर या खड़ा हो कर पानी पीने के बजाय आराम से बैठ कर पानी पीना ज्यादा अच्छा होता है।

- अनित कुमार राय टिंकू, बाघमारा, धनबाद।

सचिन पुरी ने उपाध्यक्ष पद पर रचा इतिहास

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के 21 मार्च 2025 को हुए चुनावों में वरिष्ठ अधिवक्ता सचिन पुरी ने उपाध्यक्ष पद पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। वे बार एसोसिएशन के किसी भी चुनाव में 4500 से अधिक वोट हासिल करने वाले पहले उम्मीदवार बने। सचिन पुरी ने कुल 4515 वोट प्राप्त किए और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 2620 वोटों के बड़े अंतर से हराया। उन्होंने अपनी शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज से राजनीति शास्त्र में और फैकल्टी ऑफ लॉ से विधि में पूरी की। 2016 में उन्हें वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किया गया, और वे उस समय दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा यह सम्मान पाने वाले सबसे कम उम्र के वकीलों में से एक थे।

सुरेश सौरभ और रमाकांत चौधरी की संपादित पुस्तक 'बच्चों के सुपरमैन' का विमोचन

लखीमपुर खीरी पुष्पांजलि जन सेवा समिति तथा परिवर्तन फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आज नगर पालिका सभागार में सुरेश सौरभ और रमाकांत चौधरी की संपादित पुस्तक %बच्चों के सुपरमैन% का विमोचन मुख्य अतिथि डॉ.द्वारिका प्रसाद रस्तोगी, कार्यक्रम अध्यक्ष जोगिंदर सिंह चावला, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवयित्री डॉ.मृदुला शुक्ला %मृदु%, वरिष्ठ कवि ने नंदी लाल ने किया। युवा रचनाकार अखिलेश कुमार %अरुण% ने कहा बच्चों के सुपरमैन की रचनाएँ पढ़कर बच्चे जागृत होंगे और अपने भारतीय सुपरमैन डॉ.भीमराव अंबेडकर, विवेकानंद, प्रेमचंद, सावित्रीबाई फुले जैसे महान लोगों के बारे में इस पुस्तक में बाल कविताओं के माध्यम से जानेंगे। संचालन कर रहे हरगांव सीतापुर के विनोद शर्मा %सागर% ने कहा बच्चों के सुपरमैन बच्चों के लिये बहुपयोगी पुस्तक है। शायर कवि विकास सहाय ने कहा सुरेश सौरभ की रचना धर्मिता नित नवाचार की ओर उन्मुख होती रही है। अमीर नगर गोला के वीरेश गुप्ता %गुलशन% ने माता पिता पर कविता सुनाकर सबको भाव-विभोर कर दिया। पवन तारा, श्याम किशोर बेचैन, अनुराग पटेल, अमन पाण्डेय, डॉ, मृदुला शुक्ला, डॉ द्वारिका प्रसाद रस्तोगी, बेबी आराध्या, आरोही, ने कविता पाठ किया। सुरेश सौरभ ने अपनी गद्य व व्यंग्य रचना %बड़े साहब का दुख% का वाचन किया। संयोजक सत्य प्रकाश %शिक्षक%, आर्य कन्या कन्या डिग्री कॉलेज की प्राध्यापिका वीना चौरसिया ,राखी चौहान, नीरज श्रीवास्तव, धर्मेन्द्र सहित तमाम लोग संगोष्ठी में उपस्थित रहे।

समय किसी का इंतजार नहीं करता

समय किसी का इंतजार नहीं करता।÷ यह एक साधारण सा वाक्य है, लेकिन जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई को दर्शाता है। हम अक्सर सोचते हैं कि अभी वक्त है, बाद में देख लेंगे,÷ लेकिन कई बार यही देरी हमें बड़े मौकों से दूर कर देती है। "Delay is Danger" – यानी देरी करना सिर्फ एक आदत नहीं, बल्कि कई बार हमारे सपनों, सेहत और रिश्तों के लिए घातक साबित हो सकता है।

क्यों है देरी खतरनाक- 1. करियर और अवसर समय पर फैसले ही सफलता दिलाते हैं कामयाबी उन्हीं को मिलती है जो समय की कीमत समझते हैं। अगर कोई नई नौकरी का अवसर हाथ से जाने देता है, तो वही मौका किसी और के लिए उपलब्ध हो जाता है। जो लोग अपने कौशल (skills) को अपडेट करने में देर करते हैं, वे धीरे-धीरे प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं। अगर बिजनेस का सही अवसर होते हुए भी हम निर्णय लेने में हिचकिचाते हैं, तो कोई और बाज़ी मार सकता है। 2. शिक्षा और सीखने की आदत ङ्क आज की मेहनत ही कल की सफलता है छात्रों के लिए समय का सही उपयोग करना ही भविष्य को संवार सकता है। परीक्षा की तैयारी टालने से आखिरी समय में घबराहट और खराब नतीजे मिलते हैं। जो छात्र समय रहते सीखने की आदत डालते हैं, वे आगे चलकर बेहतर करियर विकल्प पाते हैं। सीखने की देरी का मतलब है नए अवसरों से खुद को दूर कर लेना। 3. स्वास्थ्य और जीवनशैली ङ्क कल से कहने की आदत छोड़ें स्वास्थ्य की उपेक्षा आगे चलकर बड़ी समस्याओं को जन्म देती है। कल से एक्सरसाइज शुरू करेंगे सोचते-सोचते कई लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। समय पर सही खानपान और हेल्थ चेकअप न करना, आगे चलकर ज्यादा तकलीफ़ और खर्च का कारण बन सकता है। तनाव को नजरअंदाज करने से मानसिक और शारीरिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। 4. रिश्ते और व्यक्तिगत जीवन ङ्क सही समय पर ध्यान देना जरूरी है रिश्तों में छोटी-छोटी देरी भी दूरियों का कारण बन सकती है। अगर हम अपनों को समय नहीं देते, तो धीरे-धीरे रिश्तों में दूरियां आ जाती हैं। माफी माँगने, प्यार जताने, या किसी समस्या को हल करने में देरी करने से रिश्ते कमजोर हो सकते हैं। जीवन में खुशियाँ बनाए रखने के लिए, सही समय पर अपने परिवार और दोस्तों के साथ वक्त बिताना जरूरी है।

देरी से बचने के लिए क्या करें- अभी करो की मानसिकता अपनाएं÷ जो जरूरी है, उसे अभी करें, कल पर न टालें। लक्ष्य तय करें और प्राथमिकताएं बनाएं÷ जो काम सबसे महत्वपूर्ण हैं, उन्हें पहले पूरा करें। डर को दूर करें÷ कई बार हम असफलता के डर से निर्णय लेने में देरी करते हैं, लेकिन बिना कोशिश किए कुछ नहीं बदलेगा। स्वास्थ्य, करियर और रिश्तों को बराबर महत्व दें÷ संतुलन बनाए रखें और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की कोशिश करें।

निष्कर्ष समय पर लिया गया फैसला ही असली जीत है- हर दिन हमारे पास फैसले लेने का मौका होता है। जो लोग सही समय पर सही कदम उठाते हैं, वे ही जीवन में आगे बढ़ते हैं। Delay is Danger – यह केवल एक चेतावनी नहीं, बल्कि सफलता की कुंजी है। आज ही अपने जीवन के हर छोटे-बड़े फैसले को गंभीरता से लें, क्योंकि खोया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।

- योगेन्द्र कुमार जैन, अधिमान्य पत्रकार ग्वालियर

पूर्व वाहिनी शिप्रा नदी की स्थिति बेहद दयनीय, गऊघाट की हालत देखी नहीं जाती

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष। किसी जमाने में नगर के अधिकांश लोग गऊ घाट पर स्नानादी के लिए जाया करते थे और गऊ माताएं भी यहीं जलपान आदि करने आया करती थीं किंतु अब समय के प्रवाह ने शिप्रा का प्रवाह अवरुद्ध कर दिया है।शिप्रा एक पतली सी जल रेखा के रूप में नजर आने लगी है।उथला घाट स्पष्टतः दिखाई दे रहा है।घाटों का नदी के निकट का अंतिम छोर बेहद जीर्ण-शीर्ण रूप में संबंधितों को चेता रहा है कि अभी भी संभल जाओ,इसे दुरुस्त कर दो वरना.....! घाट बुरी तरह से धसक गए हैं,उनके पत्थर खिसक गए हैं और चूने में जुड़े हुए कोई हिस्से सुरक्षित नहीं बचे हुए हैं।अपन बारीकी से देखें तो अपनी धरोहर संरक्षण के अभाव में वक्त की मार सहते हुए अपनी रुग्णता पर आंसू बहा रही है। घाट तक पहुंचने वाले सीमेंट के रास्ते के मध्य में बड़ी दरारें पड़ गई हैं।आसपास भट्टों ने अपना साम्राज्य फैलाना प्रारंभ कर दिया है।खाल का फूल भी बदतर और बेतरतीब होने से हमेशा दुर्घटना का अंदेशा बना रहता है।नगर की पावन शिप्रा नदी और उसका तट गऊघाट अब बहुत ही विचारणीय स्थिति में पहुंच गया है।समय रहते इसकी

देखभाल नहीं की या यथोचित मरम्मती करण नहीं किया तो हालत बहुत ही बद से बदतर और भयावह होने वाले हैं।